SUBJECT: GEOGRAPHY

CLASS: B.A. Part Ist (Hons.), PAPER: Ist, UNIT: Vth.

TOPIC: RELIEF OF THE INDIAN OCEAN

BY :— Dr. Sanjay Kumar, Assistant Professor, Dept. of Geo.
D.B. College, Jaynagar, L.N.M.V. Darbhanga.
(Email - sanjaykumar.phd@gmail.com)

LECTURE NO. - 16

हिन्द महासागर (INDIAN OCEAN)

➡ विस्तार तथा आकार :- यद्यपि हिंद महासागर प्रशांत तथा अंध महासागर की अपेक्षा बहुत ही छोटा है लेकिन हमारे देश के दक्षिण में स्थित होने के कारण यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सागर है। इसका कुल क्षेत्रफल 7,34,25,500 वर्ग k.m. है। यह महासागर उत्तर में दक्षिण एशिया, पूर्व में हिन्देशिया व आस्ट्रेलिया तथा पश्चिम में अफ्रीका महाद्वीप से घिरा हुआ है। दक्षिण में 20° से 115° पूर्वी देशांतर के बीच अंटार्कटिक महाद्वीप का तट आ गया है। कर्क रेखा इस महासागर की उत्तरी सीमा है। इसके तट मुख्यतः प्राचीन पठारी भागों के बने हुए हैं। जिनमें अफ्रीका, अरब, दक्कन तथा पश्चिमी आस्ट्रेलिया के पठार उल्लेखनीय हैं। इन सभी का सम्बंध प्राचीन गोंडवानालैंड से है। केवल उत्तर-पूर्व में यह महासागर, हिन्देशिया की द्वीप शृंखला तथा म्यांमार के वलित पर्वतों द्वारा घिरा हुआ है।

➡ नितल :- इस महासागर में अंध महासागर की अपेक्षा महाद्वीपीय मग्नतट बहुत ही कम हैं। इसकी औसत गहराई 4000 मीटर है। इसका 60% भाग 4000 से 6000 मीटर गहरा गम्भीर सागरीय मैदान है। इस महासागर में गर्तों (खाइयों) का अभाव है। केवल जावा के दक्षिण में सुंडा गर्त (Sunda Trench) ही है जिसकी गहराई 8152 मीटर है।

➡ कटक (Ridges) — हिंद महासागर में एक मुख्य कटक है जो इस महासागर के मध्य में इसके उत्तर से दक्षिण की ओर फैला हुआ है। इसकी औसत गहराई 4000 मीटर से कम है। यह भारत के दक्षिणी सिरे से आरम्भ होता है और लक्षद्वीप-चागोस (Lakshadweep-Chagos) कटक के नाम से जाना जाता है। मालद्वीप तथा लक्षद्वीप नामक द्वीप इसी

Scanned with CamScanner

कटक पर स्थित है। यह 2000 मीटर से कम गहरा है। यह कटक दक्षिणी ~~अक्षांश~~ की ओर आगे बढ़ता है और भूमध्य रेखा से 30° दक्षिणी अक्षांश तक यह चागोस सेंट पाल कटक अथवा मध्य महासागरीय उभार के नाम से विख्यात है। 20° दक्षिणी अक्षांश के बाद यह दक्षिण-पूर्वी दिशा में आगे बढ़ता है और इसकी चौड़ाई 320 K.m. है। 30° दक्षिणी अक्षांश के दक्षिण में इसकी चौड़ाई 1600 K.m. हो जाती है और यह फैलकर एक विशाल अंतःसमुद्री पठार का रूप धारण कर लेता है जिसे एमस्टर्डम सेंट पाल पठार कहते हैं। यह 30° से 50° दक्षिणी अक्षांशों तथा 65° से 110° पूर्वी देशांतरों के बीच फैला हुआ है। इसकी गहराई 3000 से 4000 मीटर है। इसके उत्तर-पूर्व में दक्षिण-पूर्वी हिंद कटक है जिसकी गहराई 1500 मीटर से भी कम है। 50° दक्षिणी अक्षांश के दक्षिण में यह पठार दो विभिन्न कटकों में विभक्त हो जाता है। पश्चिम में 1500 मीटर गहरा करगुलेन - गासबर्ग कटक है। पूर्व में भारतीय - अंटार्कटिक कटक है।

बंगाल की खाड़ी में अंडमान - निकोबार कटक अराकान इरावाडी नदी के मुहाने से निकोबार द्वीप-समूह तक विस्तृत है। अंडमान - निकोबार कटक तथा एमस्टर्डम सेंट पाल पठार के बीच एक अन्य कटक का पता चला है। यह 90° पूर्वी अक्षांश के साथ-साथ उत्तर से दक्षिण दिशा में फैला हुआ है इसलिए इसे 90° पूर्वी कटक कहते हैं।

उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई मुख्य कटक में से कई अन्य छोटी-छोटी कटके निकलती है जैसे —

- चागोस द्वीपों के उत्तर-पश्चिम की ओर दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम दिशा में सोकोत्रा - चागोस कटक,
- अफ्रीका की ओर → शेचलस कटक,
- कार्ल्सबर्ग कटक,
- मेडागास्कर के दक्षिण में एक अन्य कटक है जिसे दक्षिणी मेडागास्कर कटक कहते है। यह 3500 मीटर गहरा है।

Note:- हिन्द महासागर के महाद्वीपीय मग्नतट एवं द्रोणियो की व्याख्या सं. 17 में देखें।

Scanned with CamScanner